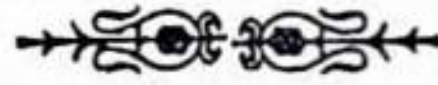


“श्री रामानन्द-साहित्यमाला” पुष्प ६५ वाँ,

श्रीअवध-प्रकाश



रचयिता—

श्रीसख्यरस रसिकराज सन्तशिरोमणि

अनन्त श्री विभूषित

श्री स्वामी शीलमणिजी महाराज

सम्पादक तथा प्रकाशक—

श्रीरामजी दासजी (सखाजी)

श्री सीतारामोय-सेवा मन्दिरम्

नजरबाग-श्रीअयोध्याजी (ड० प्र०)

प्रति ५००

प्रकरण

श्री जानकी-नवमी

सं० २०३६ वि०

निष्ठावर

सप्रेम पाठ

12121

ॐ श्री गणेशाय नमः ॐ
 ॐ श्री सीतलामाय नमः ॐ 1302
 ॐ श्रीमते रामानुजाय नमः ॐ
 राम दास छात्रनी सेवा दस्त

12121

गुरु रामानन्द प्रभु बन्दों पद धरि शीस ।
 जिनके चरण सुहासिने बंधु होत रघु ईश ॥
 करुणा मय चितामनी सुधा मिधु गुरु द्रिष्ट ।
 एक बार जेहि देखहीं ताहि साँवरो मिष्ट ॥
 ज्ञान रसिकता भक्ति शुभ विमल बुद्धि विस्वास ।
 गुरु कृपा करि हेरहीं तुरित चित्त हरि पास ॥
 बंदों गुरु पद कमल को सुखमय परम उदार ।
 नवल माधुरी लाल सीं देत नित्य नव सार ॥
 बंदों अम्ब सु कौसलै लखन मातु शुभ गाथ ।
 भरत मातु सब मातु पद बंदों महि धरि माथ ॥
 महाराज रघुराज पद बंदो बारहि बार ।
 जिनके मन नित मीन हैं बन्धु पुत्र छबि वार ॥

बन्दों रघुवर लाल सिय भरत शत्रुहन लाल ।
 लखन उमिला मांडवी श्रुति कीरति शुभ माल ॥
 नवल माधुरी अवध की सरजू नवल सिंगार ।
 बन्दों अवध सुद्रिगजा तिन में नवल बिहार ॥
 बन्दों रघुवर दूत पद हनूमान शिर ताज ।
 बन्दों बानर ईश पद लंकापति छबि छाज ॥
 बन्दों रसिक सुजान जे, अवध रसिक नर नारि ।
 जिन्हके जीवन लालसिय मगन माधुरी वारि ॥
 सखा सखी जे महल में दासी दास खवास ।
 तिनके पद रज शीश धरि बरनौ अवध प्रकाश ॥
 ललित सलोनी जनकजा ललित सलोने लाल ।
 अवध प्रियाकी गोद में निशिदिन रमत रसाल ॥
 अवध रसाल विशाल है लली लाल सुखदाय ।
 अद्भुत रंग विनोदमय रास रंग बहराय ॥
 सम्बर अरि शत कोटिगुन कला केलि छबि छाज ।
 सिन्धु सुता सत इन्दु चय सुधानंत रस राज ॥

कनक भवन के बीच में विलसत सिय रघुराज ।
 नव किशोर नव रूप दोउ नव परिकर नव साज ॥
 जनकलली रघुचंद जू मद् चिद आनंद कंद ।
 तिनके नख की चन्द्रिका पार ब्रह्म निर द्वन्द ॥
 कोटिन रवि शशि तेजमय कोटिन विभव विलास ।
 जनकसुता रघुलाल के नख प्रति करत निवास ॥
 रस भोने रस रूयाल में सने रहत सिय लाल ।
 शीलमनी दोउ लाड़िले सुन्दर रसिक रसाल ॥
 त्रिनसु गुल्म अवधि में श्याम गौर लखि रूप ।
 अवध लाड़िली लाल की सरजू लली अनूप ॥
 सरजू तट बहु कुंज में विहरत जुगल किशोर ।
 नवल भूमि श्रीअवध की नवल सुद्रुम रसबोर ॥
 अवध सरूप अनूप है लाल लली रस सान ।
 विहरत नित नव केलिमें नवल रसिक प्रिय प्रान ॥
 जहाँ द्रुमन जहाँ गुल्म पर प्रिया नैन चित जाय ।
 तेहि देखत प्रिय लाड़िलो उमगि उमगि सरसाय ॥

वारों सुरपति सुरतरु चिंतामनि धनराज ।
 परम रंग रस रास मय विमला मोद सुख छाज ॥
 वेद वेदान्त सब शास्त्र में परम तत्व जो सार ।
 सोइ सीता रघु लाड़िलो अतिशय रूप उदार ॥
 अवधि सीय रघुलाल हैं चिदघन आनंद रासि ।
 सिया लाल श्री मंत है जानत विज्ञ सुधासि ॥
 ईश ईश पर ईश है राज सुवन रघुनाथ ।
 सोई नाथ श्रीअवध के रहत सर्वदा हाथ ॥
 एक पत्र के नोक सम नहिं सुरतरु सत कोट ।
 जनकलली रस लाड़िलो तिन्हसे छन नहि ओट ॥
 फूले सधन सु कुंज में मत्त भँवर गुंजार ।
 लता लपेटी काम में लली लाल छबि धार ॥
 जे श्रुतिज्ञ शास्त्रज्ञ है तत्व ज्ञान बोधज्ञ ।
 ते सुजान बसि अवध में दंपति रसिक रसज्ञ ॥
 शुद्ध वेद सिद्धांत यह बसो अवध धन मानि ।
 पुरवासी सिय राम तन यह विवेक उर आनि ॥

परम ब्रह्म श्रीअवध है सगुन नेत्रजा जानि ।
 सगुन अगुन द्वै ब्रह्म पद कहत वेद वित छानि ॥
 श्री मति त्रिमजा छाँड़ि कै करत और सिद्धांत ।
 ते नहिं जानै वेद को परम तत्त्व गुह्यांत ॥
 जो गुन वैभव अवधि में सो कहतहूँ नहिं पाय ।
 दास मित्र पशु बंधु संग परम माधुरी छांय ॥
 ज्ञानी एक एकाग्र चित्त जोगी पचत समाधि ।
 एकी एका मुक्त सो नहिं कुटुंब संग साधि ॥
 अवध पुरी घन मोद सो वरसत राम विलास ।
 तेही नीर में वीर सब प्रति दिन उमग हुलास ॥
 अवध भूमि रस भूमि है लाल लली सुख दाय ।
 नवल द्रुमन नवल लतन में परिकर संग सर साय ॥
 वेद वेदांत सिद्धांत में नहिं कोउ साधन माहिं ।
 जो अचर्ज श्रीमती के भूमि माहि सरसाहि ॥
 नहिं रति पति के जनक में नहिं निरद्वैतक माहि ।
 जो विलास श्री अवध में परन परन के छाँहि ॥

शुभ मंगल श्रंगार की नवल बेलि रजधानि ।
 ज्ञान जोग जप ध्यान से कोटि गुना महि मानि ॥
 अवध परस तन होय मे निज स्वरूप पर भास ।
 द्वै भुज श्यामल गौर वर द्वै भुज स्वयं विलास ॥
 नव रस नव संबंध जो नित निज पर के माहि ।
 सो सुख विलसत अवध में भुज विशाल के छाँहि ॥
 सरस्य सुधा सिंगार निधि जनक लली सिय नाँह ।
 मधुर सखा सखि मीन है लीन पीन छवि माह ॥
 नवल कमल सी लाड़िली फूलि फैलि मकरंद ।
 राज सुवन रघु लाड़िलो नित नव रसिक मलिंद ॥
 वरषत सुधा सु नित्य नव नव रंग सरजू तीर ।
 नवल कमल बहु भाँति कै नवल मोहनी नीर ॥
 नवल भवर तिन बीच में नवल मधुर सुर गान ।
 नवल वेद नव प्रेम की करत सुधा जस पान ॥
 पशु पंखी जे अवध में गुल्म लता समुदाय ।
 ते सब पीवत माधुरी सीय लाल सरसाय ॥

चिदानंद घन रामि सब तृनहु भंग शुभ सौव ।
 परम विदित त्रैलोक में गावत वेद अतीव ॥
 दुर्गा गणपति सूर्य में शंभु विष्णु में नाहि ।
 जो विलास श्री अवध में आदि कवी फैलाहि ॥
 सहित विभव परिवार से परय धाम के माहिं ।
 भुक्ति मुक्ति मलि चरण तें गोर श्याम छवि गाहिं ॥
 अवध पुरी सिय लाल को परम प्रीय जिय जानि ।
 विहरत कुंजन गलिन में सरजू छवि रस खानि ॥
 नवल वृक्ष सरजू नवल भुकी लता नव भार ।
 रसिक छबीले बाल दोउ लसि परिकर सुकुमार ॥
 कहूँ व्याह लीला रचत सखी सरस रस जाल ।
 दुलहिनि सीता लाड़िली दूलह ललन रसाल ॥
 नित नव पुर अभिराम सुठि लसत सुहाग सुभाग ।
 पत्र पत्र में लसत है छैल फैल अनुराग ॥
 धाम रूप लीला ललित नाम ललित ललि लाल ।
 तैसे पुर वासी ललित छवि मय रंगे रसाल ॥

सो सुख जीवन प्रान सम उमा रमन छकि पान ।
 रमा रमन रमि प्रेम में परम प्रिया रस सान ॥
 अवध पूतरी प्रेमसी देव मोहनी एव ।

कि अचिंत यह दामिनी धार मूरति सुख लेव ॥
 सोभा सुभग अचर्ज की सिद्धि रिद्धि सर सानि ।
 भुक्ति मुक्ति नव लतन में रहीं उमगि लपटानि ॥

कुम कुम अतर गुलाल से सींची बगर बजार ।
 नरग निवारी केवरा बिछि रहे कमल उदार ॥
 बीना बंसी बेनु की मुरली धुनि गह राय ।

बंदी मागध सूत की वेद नाद छहराय ॥
 ऊँची अटा विलास में चूमत व्योम विमान ।
 नर नारी सुख शील से धर्म तेज मय भान ॥

सुर संपति शत वृन्द चय दासी गृह सरसाय ।
 सुन्दर भूषन वसन तन मैन मोहनी छाये ॥
 सुन्दरि श्यामल माधुरी पीवत नाहिं अधाये !

प्रति दिन विमल उछाह में नर नारी हुलसाय ॥

पुरी अयोध्या विमल अति विमल लड़ैती लाल ।
 विमल मोद सब ठौर में चिद मय विमल विलास ॥
 जे पशु पक्षी अवध में कूकर शूकर स्यार ।
 ते सब धन्य सु धन्य हैं विहरत रघुवर द्वार ॥
 गावत नाचत गलिन में हुलसत पुलकत नैन ।
 परसत सरसत रेनु को महा मोद मन चैन ॥
 रेनु धेनु कीं कल्पतरु अकि चिंता मनि आय ।
 ए सब वारों रेनु पर रेनु राम पद दाय ॥
 अवध रेनु सुर चाहहीं विधि हरिहर मुनि शेष ।
 सुन्दर भूमि सुहावनी विहरै ललन हमेश ॥
 अपर देस में वेद विधि ज्ञान भक्ति दृढ़ होइ ।
 तब पावत विश्राम पद यह गावत सब कोइ ॥
 सब साधन विधि त्यागि के परा रहै दिल खोल ।
 तिन सम जोगी सिद्ध नहि जो अटपट कछु बोल ॥
 महिमा त्रिन तरु सु गुल्म की शेष महेश न गाव ।
 शारद नारद वेद हूं ब्रह्मा पार पार न पाव ॥

सोता पति रघुनन्द रस प्रीयतमा यह धाम ।
 साधु विलास हुलाम मय रस रंग मय अभिराम ॥
 जो सुख नहिं गोलोक में नहिं वैकुण्ठो माहिं ।
 नहिं निरीह निर नाम में सो विथिन छहराहिं ॥
 फूले द्रुम चहुँ ओर में भँवर करत गुंजार ।
 दुलहिनि प्यारी जनक जा दूलह राज कुमार ॥
 अति सुन्दर सुकुमार दोउ श्याम गौर चित चोर ।
 कनक भवन रंग मय रंगो ये नित नव रंग बोर ॥
 अवध पुरी मिय लाल की वरषत रंग की धार ।
 भीजत है नित रसिक जन परे माधुरी सार ॥
 जो चाहो मिय लाल पद रहै अवध में छाय ।
 सियाराम हिय बीच में बसत सदा वरियाय ॥
 ज्ञान जोग वैराग्य तप त्याग व्रत जम नेम ।
 ते सब लोटत रेनु में करि करि अति सै प्रेम ॥
 वैकुण्ठहु गोलोक सत निराकार निर ओक ।
 तोल्यौ अवध सु रेनु सैं तुल्यो न तिल की नोक ॥

रसिकन बिनु जानै नहीं यह सुख संपत्ति सान ।
 वेद वेदान्त सब कहतहै बिन गुरु नहीं कछु भान ॥
 नव दुलहिन सिय लाड़िली नव दूलह नव रंग ।
 नवल राग नव सहचरी नवल ख्याल नव संग ॥
 नव-परिकर नव नेह में नवल कुंज के माहि ।
 विहरत सुन्दर साँवरो नवल द्रुमन की छाँहि ॥
 पारि जात मंदार चहू हरि चंदन संतान ।
 कल्पप्रुम की लतन में कुंजै विविध विधान ॥
 कहूँ रास रस केलि में चकई भँवरा खेलि ।
 कहूँ मंजु रस लतन में पीवत रंग सहेलि ॥
 सकल लोक सुख त्यागि के वसत अवध के बीच ।
 ते बड़भागी भाग निधि तिन्है न परसत मीच ॥
 वेद वेदान्त सिद्धान्त विधि विद्या मंत्र सु जंत्र ।
 रेनु शीश धरि नाचहीं किये चित्त निज मंत्र ॥
 महा विष्णु सह लक्ष्मी परम शंभु युत जाय ।
 लसै अवधि के रेनु में नवल रंग सर साय ॥

धन्य धन्य श्री अवध पुर धन्य नारि नर सीव ।
 जिनके जीवन लाड़िलो जनकलली को पीव ॥
 सो सुजान पंडित सोई सोई चतुर विज्ञान ।
 भजत सीय रघुवीर पद अवधि रेनु धन मानि ॥
 अवधपुरी कै बाहिरौ चिंतामनि की कोटि ।
 सो नहिं चाहै चरन से रहैं रेनु में लोटि ॥
 धन्य ज्ञान वैराग्य शुचि धन्य ध्यान तप तासु ।
 अवध गली फिरते रहै मन मे परम हुलास ॥
 माँगि मधुकरी अवध में कवने विधि बस कोय ।
 तिन सम धन्य न लोक मे नहिं सुर लोकहु होय ॥
 करे मजूरी अवध में रहे बस्य कोइ होय ।
 फिहत सदा तिन संग में भुक्ति मुक्ति सब कोइ ॥
 ते नहि छूवै चरन से लगी अवध की चाट ।
 ललित लड़ैतो लाल की मिलि मिलन की वाट ॥
 रूखा सूखा खात हैं सोवत चरन पसारि ।
 तिनकी भाग सराहहीं मुक्ति मुनी सुर झारि ॥

जन्म मृत्यु भय मोह मद अवध कहत जरि जाय ।
 परम प्रीति नव कुंज में ललन माधुरी पाय ॥
 कोटिन जप तप दान करू ज्ञान ध्यान सब कर्म ।
 अवधपुरी के रेनु सम एको तुलै न धर्म ॥
 प्यारे अवध को छाँड़ि के मति करू कहूँ विश्वास ।
 सीय नाथ रघु लाड़िलो अनत रहै एक स्वास ॥
 जिन्है न प्यारी अवध है नहि प्यारे रघु लाल ।
 तिन कै संग न कीजिये ते भुजंग विष काल ॥
 ते सुमित्र नहि शत्रु हैं जिन्है न अवध सुहाव ।
 तिनक मुख नहि देखिये संगति कुतः भलाव ॥
 अवधपुरी को छाँड़ि के अवर कहूं को जाय ।
 सुधा सिंधु को त्यागि के मूढ़ कीच मन लाय ॥
 काल कर्म कुसुभाव दै उर्मि छवो विकार ।
 तिनकी गंध न अवध में गावत वेद उदार ॥
 चिद मय भूमी अवध की विलसत जुगल किशोर ।
 लाल लड़ैती लाड़िलो जनक लली चित चोर ॥

गुंजत भँवर सु कोकिला कुहुकत चातिक मोर ।
 परानंद सब ठौर में नृत्य गान रस बोर ॥
 सदा सुहागिनि जनकजा प्रान नाथ नित वस्य ।
 जहाँ द्रष्टि जहँ पग धरै तहाँ लाल चित रस्य ॥
 पगे परस्पर रूप में नवल माधुरी पान ।
 चन्द्र चकोर घन मोर से सने फने रस सान ॥
 सुन्दर अधर सुनासिका नैन बैन छवि सान ।
 अलकै ललित कपोल पर मैन करत जनु पान ॥
 सुन्दर पुलिन सुहावनी सरजू तट की रेनु ।
 जहँ श्री रघुवर लाड़िली खेलत हैं नित गेनु ॥
 कोकिल मोर विहंग वर बोलत हंस चकोर ।
 हरित भूमि अति पावनी सरजू लेति हिलोर ॥
 परम तत्व सिय लाल हैं परिकर सहित ललाम ।
 तिनके नख की चन्द्रिका अज निरीह निर नाम ॥
 विधि हरिहर पर विष्णु सुर महा शंभु सोमंग ।
 धारे वेष विहंग वर सरजू तीर सुरंग ॥

निरखन श्यामल गौर छबि नृत्यत उमग्यौ रंग ।
 रीभक्त जीवन प्राण प्रिय देत नैन को संग ॥
 सघन लता चहुँ ओर जनु बनि रही शुभग वितान ।
 गुंजत कोकिल मधुर वर नृत्यत मोर सुजान ॥
 तिन में परिकर सहित रस विलसत रसिक रसाल ।
 रैनि दिवस रंग रास में छक्यो छैल छबि वाल ॥
 चिदमय विमल विनोद चय रस मय ललित ललाम ।
 अहो रूप अहो माधुरी लसत अमित अभिराम ॥
 रस भीने रस ख्याल में सने रहत सिय लाल ।
 शीलमनी दोउ लाडिले सुन्दर सजन रसाल ॥
 एक अदा एक रंग में श्याम गौर छबि साँन ।
 छैल दोउ रंग सिन्धु में मगन सुधा रस पान ॥
 एक मधुरता एक वय एक लसनि एक नेह ।
 एक सुभाव एक प्राण मन शील मनी शुभ गेह ॥
 कल कपोल कुंडल ललित लोल मोल चित लेत ।
 अलकै घुंघुर मंजु रस चन्द्र वदन सुख हेत ॥

सब से परे परात्पर गुनातीत सियलाल ।
 तिनके नख की चन्द्रिका निगुन ब्रह्म विसाल ॥
 नित नव विमल विलास में लसत सिया रघुलाल ।
 नव रंग सरजू तीर में अवध गली रंग जाल ॥
 जे नहिं गावै अवध को महिमा परम विशाल ।
 ते बालिस सत सभा में व्यर्थ बजावत गाल ॥
 नर नारायण बद्रिका पुष्कर गया प्रयाग ।
 सेतु शंभु जगनाथ प्रभु सेवत नित अनुराग ॥
 गंगा विरजा हंसजा सेवै सरजू तीर ।
 काशी कांची अवंतिका मथुरा माया धीर ॥
 स्वर्ग मृत्यु पाताल में जे सरि कूप तड़ाग ।
 ते सब सरजू रेनु में बसत मानि निज भाग ॥
 द्वारा तो द्वारे खड़ी संतानन के नित्य ।
 ते बड़ भागी भाग निधि सेवै तन मन चित्य ॥
 परम धर्म यह जानिये सीता पति मे प्रेम ।
 ह्वै दृढ़ अवध गलिन में फिरत किये अति नेम ॥

अवर देश में ज्ञान जप जोग तत्त्व मय होय ।
 ते न अवधि के त्रिनहु सम कहत शंभु शत जाय ॥
 रजधानी सिय नाथ की परम तत्त्व की सीम ।
 शोभा सुख माधुर्ज की भाग भोग सर सीम ॥
 वामन कृष्ण सु परशुधर बलि नरसिंह उदार ।
 मच्छ कच्छ बाराह बुध कलकी है अवतार ॥
 दुर्गा गणपति जोति पति शंकर विष्णु सु देव ।
 अवधपुरी के रेनु को इष्ट मानि नित सेव ॥
 मिथिरिधि नवनिधि दारि निधि जोग दान तपस्वान
 सकल विभव सब लोक की साधन मिधि परधानि ॥
 विद्या वेद वेदान्त की सीम अवध की रेनु ।
 नृत्य गान सब ठौर में बाजत मुरली बेनु ॥
 नर नारी पशु राम तन लता द्रुम जे जंतु ।
 ते सद्चित घन मोद मय ललित रूप रस संतु ॥
 अतिसै प्रिय रघुलाल के त्रिन सु गुल्म नर नारि ।
 जस लोभी के हीय में मणि मुक्ता के दारि ॥

फरत रहत छबि में भरा पुर वासिन के धाम ।
 वरषत मेह सनेह को सुखद छैल अभिराम ॥
 त्रिन गुल्महु फल फूल में दरसत विमल सनेह ।
 कवन कथै नर नारि की परम प्रीति मय देह ॥
 नैन रूप गुन कान मे जीभ स्वाद सियाराम ।
 शुत्रि सुभाव सिय लाल को रोम रोम गुहि दाम ॥
 परम धाम सियलाल को अवधपुरी हिय जानु ।
 जैसे मीनू सु नीर में परम मगन सर सानु ॥
 परम तत्व जो वेद कह वेदांतन में गाव ।
 अवधपुरी के रेनु में सो लोटत करि भाव ॥
 ललित लड़ैती लाल को यह धन जीवन धाम ।
 रहत सदा विहरत दोउ परि कर सहित ललाम ॥
 फूले सुन्दर कमल बहु कुंड तड़ागन बीच ।
 विमल नीर सोपान सुठि हेरे मिले न कीच ॥
 कोकिल मोर चकोर पिक चातक चकवा हंस ।
 सारस कीर सुसारिका पत्तिन सहित सुवंस ।

मरजू अवध सुहावनी शोभा सुख की खानि ।
 सीता रघुवर प्रान की वशीकरन अस जानि ॥
 जन्म महोत्सव अवध में घर घर बाज बधाव ।
 अवधनाथ गृह बाहिरौ परमानन्द सुहाव ॥
 बाजत बीन मृदंग बहु ढोल मंजीरे झाल ।
 गावत नट नटि नृत्तकी भट कौतुक चहु ख्याल ॥
 ब्रह्मानन्द सु गलिन में बहा फिरत चहुँ ओर ।
 भरदत्त चरण सु रसिक वर फँसे स्याम दृग कोर ॥
 सुन्दर युगल किशोर छबि निरखत नैनन माँझ ।
 मगन हहत पुर नारि नर सदा प्रात औ साँझ ॥
 अकथनीय श्री अवध है अकथ रंग रंग बोर ।
 विलसत निशिदिन प्राण प्रिय सुन्दर श्यामल गौर ॥
 अवध मोहनी सोहनी वशीकरन कछु आय ।
 शोभासय रस मोद मय चहुँ ओर छबि छाय ॥
 लता दुर्म फल फूल से भूमि भूमि रहि डार ।
 गुंजत मत्त विहंग वर वरष सुधा सब धारि ॥

अहो रूप अहो माधुरी ललित भूमि सरसाय ।
 मनि मय मोती हीर रंग लाल लली दरसाय ॥
 चंदन अतर कपूर की महक चहक चहुँ ओर ।
 केशर कमल गुलाब सी मदन चंद चय चोर ॥
 चिन्तामणि के महल सब कल्पद्रुम की बाग ।
 कामधेनु सी धेनु सब भरी रंग अनुराग ॥
 सदा सु अवध अखंड रस सत चित आनंद राशि ।
 कोटिन रवि शशि अग्नि से परम तेज मय भासि ॥
 नहीं मोह नहि शोक तहँ जरा मृत्यु नहि रोग ।
 माया गुण एको नहीं नहीं काल वस लोग ॥
 सप्तावरन सु अवधि को खाई दुर्ग विशाल ।
 ब्रह्म ज्योति जनु सप्त विधि सेवति अवध रसाल ॥
 अकथ निरीह सचेत है सदमय अगम अपार ।
 परम तेज एक चित्र मय अचल कूट सम सार ॥
 विमल अखंड अछेद है अज अक्षय रस एक ।
 माइक गुन परसे नहीं जस भुजंग तन भेक ॥

लसत कंगूरे वृन्द बहु द्वार भरोखे जाल ।
 मणिमय विसद विचित्र अति मनु सुमेर के माल ॥
 सप्तावरन के मध्य में सरजू लेति हलोर ।
 सप्तौ कोट अनूप में विहरत जुगल किशोर ॥
 सब में कुंज विहार के सब मधि तने वितान ।
 सुन्दर द्रुम सु भार से रंग रंग भुकी लतान ॥
 हीरा मोती मणिक कै कहूँ रत्नन के ढेर ।
 कौस्तुभमणि चिंतामणि तिनके लगे सुमेर ॥
 अष्टम भाग अखंड छवि परम तेज नव ओभ ।
 महल अटारी रंग मय ऊँच सुमेर सम सोभ ॥
 शोभा विमल अनूप रम गलिन बजारन बीच ।
 मनो मोहनी करन शुचि केलि कला की कीच ॥
 अवध तड़ाग अनूप रँग कमल सिया रघुचन्द ।
 पुर नर नारी मधुप से परम लुब्ध सुख कंद ॥
 परम कृपा की रूप यह अवध पुरी को वास ।
 सो जानै यह मरम को जिन्है लाल की प्यास ॥

नहि जप जोग विराग फल नहि तप तीरथ दान ।

नही नेम नहि व्रत फल जही ज्ञान नहि ध्यान ॥

एक राम पद प्रेम फल अबध नगर को वास ।

यह जाने सिध लाल के परम उपासक खास ॥

नर्म सखा दस कोटि चय रघुवंशिन के गेह ।

विलसत नवल विलास को संबंधी रस देह ॥

चौविस भनत अपार बहु कला अंश अवतार ।

ते सब सखा सजाति में द्वै भुज रूप उदार ॥

स्वगत सजाती विगत में नवल नेह संबंध ।

रघुकुल जन्म सु नित्य ते रघुनन्दन भुज कंद ॥

विहरत कुंज गलिन में छैल छबीले गात ।

रघुनन्दन प्रिय नाथ से करत रसोली बात ॥

बहु रितु ह्वै घन मोर से कुहकत चित छबि बोर ॥

कहुँ रूप अस धरत है लाल लली चित चोर ॥

श्याम गौर छबि नीर शुभ ए नित मीन सु लीन ।

छन बिछुरत तन प्रान जिमि छन बिछुरत नहि भीन ॥

सदा रहत रंग संग में पगे रंगे सुत प्राम ।
हँसत हँसावत सजन को नृत्य वाद्य करि गान ॥

खोभि खिभावत लाल को रीभि मिलावत बाल ।
कहूँ सिंगारत लाल को कहूँ करत बहु ख्याल ॥

मात पिता गृह जात जब सगै रसिक रसाल ।
भोजन सैन शिकार में केलि कला के माल ॥

चौसठ कला अपूर्व औ विद्या विविध विधान ।
कोक ओक छल राज के जेते शुभाग सु जान ॥

तिन में निपुन पुरान में अगम निगम मे भान ।
मधुर सखा सियलाल के जस तन में निज प्रान ॥

निशि दिन रास विलास मे बिलसत सिय रघुलाल ।
परिकर प्रान अधार नित जे जस तहो निहाल ॥

छठ रितु बारह मास की अवधपुरी छवि खानि ।
सीयलाल नित रंग में तहँ सरसत रस सानि ॥

सावन रंग हिंडोलने भादों नाव नेवार ।
आश्विन शरद बिहार बहु कार्तिक दीप उदार ॥

अगहन व्याह महान रस दूल्ह दुल्हिनि रंग ।
 पूस माघ सिय लाडिलो विलसत परमत अंग ॥
 फागुन होरी कुंज में गोरिन के संग रंग ।
 केशरि कुँम कुँम नीर के मचत मदन को जंग ॥
 चैत हरीरे लतन में विहरत सखिन समेत ।
 कूजत कोकिल भँवर बहु लाल रसिक रस लेत ॥
 फूल वाटिका बाग चहु बन विकसित सर कुंजु ।
 विलसत माधव मास में लली लाल रस मंजु ॥
 तह खाने खसखान में मोती महल उदार ।
 फूलन के बँगले बने तामे छुटत फुँहार ॥
 फूलन गादी गेडुवा चँदवा झालर फूल ।
 परदा फूल बिछँवने मोहत परम अमूल ॥
 तामे सुमन सिंगार करि विलसत नवल किशोर ।
 सेवति नैनन पलक से अली लली चित चोर ॥
 केशरि अतर कपूर शुभ चंदन अगर उमीर ।
 जेठ मास दोउ लाडिले विहरत सरजू तीर ॥

सुन्दर मास अषाढ़ में घटा व्योम दरसाय ।
 विहरत छैल लबीलि दोउ राग रंग सरसाय ॥
 रात दिवस रितु मास प्रति जुमल पक्ष के माँहि ।
 विलसत कुंजन महल में रास थली छहराहि ॥
 शुभ मंगल गुन रत्न चय रस सीमा जस धाम ।
 जग मग ज्योति अखंड मय अवधिपुरी अभिराम ॥
 निर्गुण ब्रह्म निरीह जो निराकार निर नाम ।
 अवरन जोति अखंड करि सेवत रघुवर धाम ॥
 सीमा ज्ञान विराग दै भक्ति सीम भरि भूरि ।
 धर्म अर्थ अरु मुक्ति शुभ सीम काम जस पूरि ॥
 साम राज मह नीति सुठि विद्या विमल विनोद ।
 कमनीता रमनी निचय भरी अवध मुद मोद ॥
 फूल फली सु लतासि की पुतरी कोई चित्र ।
 अद्भुत कोई तेज मय राची अवध सुनित्र ॥
 की अपूर्व कोई सिंधु वर विविध रत्न चय सोह ।
 की मोहनी वर देवकी त्रिण गुल्महु मन मोह ॥

की अद्भुत रंग चन्द्र चय की चय दामिनि राज ।
 जनक लली रघुलाल रंग कुंज गलिन में छाज ॥
 शुक मनकादिक व्यास दै नारद शंभु भवानि ।
 विश्वामित्र वशिष्ठ प्रभु ब्रह्मा शारद मानि ॥
 सेवत सीताराम पद अवधपुरी सुख धाम ।
 महा लक्ष्मी नाथ प्रभु सहित भामिनी वाम ॥
 सोहत सुधा बिचित्र हिय वापी कुंड तड़ाग ।
 फूले वारिज वारि महँ फूल बाटिका बाग ॥
 तन मन वच से अवध को जो चाहत बड़ भाग ।
 नवल लड़ैती लाल रंग रूप माधुरी पाग ॥
 करे मनोरथ अवध प्रति आवन को जिय कोय ।
 तिहि छिन पितर सुअवध में आय मगन चित होय ॥
 इहाँ कर्म भोगै नहीं कीये जन्म शत जोय ।
 सरजू नोर के परसतहि रामरूप नर होय ॥
 नहीं मंत्र नहीं जंत्र फल नहि पूजा नहि पाठ ।
 नहीं वेद नहि शास्त्र फल नहि साधन के बाट ॥

नहीं कर्म नहीं धर्म फल नहि बल युक्ति उपाय ।
 करुना सीतानाथ की सोई वास करवाय ॥
 रामानुज प्रभु रसिकवर रस मूरति सिरताज ।
 तिनके अनुग प्रकाश यह रच्यौ सकल सुख साज ॥
 पढ़त सुनत चित लाय कै गुनत मोद उमगाय ।
 सीय लाल की माधुरी तिहि छिन में दरसाय ॥
 रसिकन को जीवन सदा रसिकन को धन आय ।
 रसिकन के हित रचो यह शील मनी सरसाय ॥

12121

प्रकाश अनन्य रसिकन हेतु तिनके जीवन धन है । श्री सीतारामार्पण
 मस्तु । सम्पूर्णरस्तु शुभं श्रेयः ।



❀ श्री अवध निवास ❀

अवध प्रभाव जान तब प्राणी । जब उर बसहि राम धनुःपानी ॥१॥

❀ कवित्त ❀

अवध सरि पावन सुहावन श्रुति चारि कहे,
पापन नशावन जग जीव फिरि आवे ना ।

कोटि कोटि काशी प्रयाग जन्म कोटि बसे,
कोटि कोटि तीर्थ किये जौन फल पावे ना ॥

तौन फल देत अवध सरजू विराजमान,
ऐसो सुख छोड़ि कहीं अनत कहूँ जावे ना ।

कहैं श्रीराम श्री सरजू स्नान किये,
गर्भ वास छूटे जात मातु पय पावे ना ॥२॥

अरस परस अंग परसे हरषि बस,
मिलत खिलत मुख मधुर पियार है ।

कनक भवन मनि रचित खचित छवि,
ललित कुँवर वर कुँवरि बिहार है ॥

सरस फरस चहुं तरफ भरफ फबि,
शरद बरफ सम भरत फुहार है ।

भनै शील मणी सीताराम को अनन्य सदा
कनक भवन वास येही श्रुति सार है ॥३॥

मुद्रकः—श्रीमनीराम प्रिंटिंग प्रेस, श्रीअयोध्याजी ।